Vol 5 Issue 11 Dec 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | Dec - 2015

Indian Streams Research Journal

डॉ. नगेंद्र की आलोचना दृष्टि

आर. वाय. शिरसाट
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग. श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय, अमरावती.

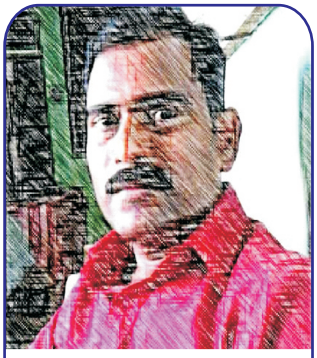

निशा वालिया

प्रस्तावना

आलोचना, साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। साहित्य की धाराओं को समझने के लिए एवं तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से आलोचना की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आधुनिक भभाषाओं के साहित्य ने प्राचीन भभाषा के साहित्य से जो सशक्त परंपराएं ग्रहण की है, उनमें हिंदी ने संस्कृत साहित्य से अपने खजाने को समृध्द किया। यह परंपरा हिंदी में रीति काल से आरंभभ हुई। आधुनिक युग की हिंदी आलोचकों ने आलोचना के गद्य के स्वरुप को अपनाकर भभारतीय और पाश्चात्य काव्य सिध्दांतों के समन्वय से एक संलिष्ठ काव्यशास्त्र का आरंभभ किया। जिसे रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, आचार्य द्विवेदी एवं डॉ. नगेंद्र ने विकसित किया। आधुनिक भभारतीय भभाषाओं में हिंदी की आलोचना विधाओं को पुष्ट बनाने में डॉ. नगेंद्र का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है। उनकी आलोचन दृष्टि ने आलोचना को नई उॅचाइयों तक पहुचायां इसीलिये आलोचना के श्रेत्र में डॉ. नगेंद्र का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने सुमित्रनंदन पंत (1938), रीति काव्य की भभूमिका (1949), देव का अध्ययन (1949), आधुनिक हिंदी नाटक (1949), विचार और अनुभूति (1949), आधुनिक हिंदी की मुख्य प्रवृत्तियां (1951), रस–सिध्दांत (1964), साहित्य का समाजशास्त्र (1982), भभारतीय समीक्षा और आचार्य रामचद्र शुक्ल की काव्य दृष्टि (1985), मैथिलीशरण गुप्त पुनर्मूल्यांकन (1987), प्रसाद और कामायनी (1990), राम की शक्तिपूजा (1993), आदि आलोचनात्मक रचनाओं के माध्यम से हिंदी आलोचना जगत को आगे बढ़ाया।

नगेंद्र सैध्दांतिक आलोचक के रुप में ख्याति प्राप्त है। वैसे इस दिशा में नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. गुलाबराय, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, बलदेव उपाध्याय, लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु', रामदहिन मिश्र, डॉ. भभगीरथ मिश्र, डॉ. आनंद प्रसाद दीक्षित, डॉ. रामानंद तिवारी, डॉ. निर्मला जैन, डॉ. सुरेशचंद्र गुप्त आदि का योगदान रहा है, परंतु सैध्दांतिक आलोचना के श्रेत्र में डॉ. नगेंद्र का योगदान सबसे अधिक है। भभारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, अरस्तू का काव्यशास्त्र, काव्य में उदात्त तत्व आदि आलोचनात्मक रचनाएं महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने परंपरागत काव्यशास्त्र के सैध्दांतिक पक्ष को स्पष्ट करने के साथ–साथ हिंदी साहित्य को उसकी कसौटी पर यथासंभव संतुलित ढंग से परखने की चेष्टा की। उनका यह आलोचनात्मक कार्यफलक व्यापक, वैविध्यपूर्ण तथा मौलिक है। रामेश्वर खंडेलवाल लिखते हैं–''सौध्दांतिक आलोचना नगेंद्र का अपना विशिष्ट व प्रिय क्षेत्र है। उन्होंने भभारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र पर विधिवत व गंभीर मंथन किया है। और उनके स्वतंत्र तथा तुलनात्मक अध्ययन की उपलब्धियों से सज्जित एक ऐसे संश्लिष्ट और परिपूर्ण काव्यशास्त्र निर्माण का उपक्रम किया है जिसमें पूर्व और पश्चिम की काव्य चिंता की प्रामाणिक तथा परिनिष्ठित उपलब्धियां समंजित की जा सके और जो श्रेष्ठतम कार्य के मूल्यांकन का यथासंभव निरापद निकष प्रदान कर सके। प्राचीन भभारतीय काव्यशास्त्र के अनेक प्रकाश स्तंभवत उपजिव्य ग्रंथों की पांडित्यपूर्ण विषद भूमिकाएं लिखकर और उनके पाश्चात्य काव्य तत्वों का भभी तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर उन्होंने काव्यशास्त्र के जिज्ञासुओं का अशेष उपकार किया है।'' [1]

डॉ. नगेंद्र हिंदी के ऐसे प्रबुध्द और गंभीर आलोचक है, जिन्होंने आलोचना के सैध्दांतिक पक्ष के साथ–साथ व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष पर भभी कार्य किया है। जिससे हिंदी आलोचना की दिशाएं अधिक स्पष्ट और विराट हुयी। चिंतन की धाराओं को विकसित करते हुये अपने कृतिकर्म के दायित्व का फलक विस्तृत कर अपने समकालीन आलोचक तथा परवर्ति आलोचकों के लिए बड़ा लक्ष निर्धारित कर दिया है। आज भभी कई समीक्षक नगेंद्र की आलोचना दृष्टि से प्रेरणा ग्रहण कर उनकी बहुमुखी दृष्टि और वैचारिक विधान के विराट फलक का पूरा संकेत पा ले सकते हैं। डॉ. जयचंद राय लिखते हैं– ''हिंदी आलोचना और मानव मूल्य की रुपरेखा लक्षण ग्रंथों में निहित जीवन मूल्यों और अंतर दृष्टि से अनुशासित रहती आयी है। और स्त्रष्टा साहित्यकारों के काव्य दर्शन को आलोचकों ने कसौटी के रुप में ग्रहण करने का बराबर उद्योग किया है।''[2]

लक्षण ग्रंथों को लेकर आलोचना का यह उद्योग डॉ. नगेंद्र निरंतर रुप से करते रहे। उन्होंने अपने युग के विशिष्ट रचनाकार और उनकी रचनाओं की मौलिक और स्वछंद व्याख्या की है। उन्होंने लक्षण ग्रंथों की भूमिकाएं लिखी साथ ही युग के विभिन्न विदवानों को प्राचीन काव्यशास्त्र के इन सिध्दातों के संदर्भ में लिखने के लिए प्रेरित किया। उनकी आलोचना का आरंभभ छायावाद से माना जाता है। डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल लिखते है–''सर्व प्रथम छायावादी आलोचक के रुप में डॉ. नगेंद्र को ख्याति मिली। प्रीति और विस्मय से संबंधित छायावादी काव्या की अंतर्मुखी साधना, सौंदर्य चेतना और कलात्मक छबियों के प्रति वे विशेष आकृष्ट थे।''[3] डॉ. नगेंद्र को छायावाद के कवियों ने विशेष रुपसे प्रभावित किया था। सुमित्रानंदन पंत (1938) उनकी इसी मनोदशा की उपज है। वैसे छायावादी काव्यधारा के अंतर्गत रस–दर्शन का कार्य सबसे अधिक नंददुलारे वाजपेयी ने किया है। उनके बाद नगेंद्रजी ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भभूमिका अदा की है। डॉ. नगेंद्र मूलतः रसवादी आलोचक थे। उन्होंने रीति काव्य की भभूमिका (1949) तथा देव का अध्ययन (1949) इस डी. लिट् के शोधग्रंथ का मनोवैज्ञानिक पध्दति से विश्लेषण कर रसवादी दृष्टि का परिचय दिया। साथ ही आधुनिक हिंदी नाटक (1949) विचार और अनुभूति (1949), आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृतियां (1951), आदि ग्रंथों में भभी उनकी मनोवैज्ञानिक दृष्टि का पता चलाता है। इससे स्पट है कि वे फ्रायड के मनोविज्ञान से काफी प्रभावित थे, परंतु उनकी आलोचना का उद्देश्य गंथों की मानोवैज्ञानिक व्याख्या करना नहीं बल्कि रस की पुष्टि करना था। उनकी रसवादी दृष्टि के बारे में महेंद्र चतुर्वेदी लिखते है– ''रसवाद पर उपनी दृष्टि केंद्रित करके भभी नगेंद्र जी आधुनिक साहित्य और समसामयिक आंदोलन से बराबर संपृक्त रहे। जहां उन्होंने कामायनी के अध्ययन की समस्यायें (1962) ग्रंथ की रचना की वही वे नयी कविता, उपन्यास और कहानियों को भभी समय–समय पर मूल्यांकित करते हैं। नयी समक्षा नये संदर्भभ (1970) में मूल्यों का विघटन, संस्कृतिक संकट, आधुनिकता का प्रश्न आदि ज्वलंत विषयों पर भभी उन्होंने विचार व्यक्त किये। नये–से–नये विषयों से उलझते रहने के कारण उनकी रसवादी दृष्टि में एक नया संतुलन आया, इसी कारण वे रस सिंध्दात के आयामों के विस्तार का आग्रह करते हैं।''[4]

इस प्रकार रसवाद का जितना आग्रह नगेंद्र की कृतियों में मिलता है उतना किसी अन्य आलोचक में दिखायी नहीं देता। उन्होंने 'रस–सिध्दांत' इस मौलिक ग्रंथ में रस के अंगों का सूक्ष्म विवेचन कर रस सिध्दांत की पुर्नप्रतिष्ठा करने का सफल प्रयास किया। नगेंद्र का यह ग्रंथ उनकी निरंतर साधना का प्रतिफल है। इस में रस की उत्पत्ति और विकास का तात्विक विवेचन किया गया है। साथ ही समय – समय पर रस सिध्दांत पर किये गये आक्षेपों का तर्क बुध्दि से निवारण कर रस की प्रतिष्ठा बरकरार रखी । यह नवीनतम ग्रंथ नगेंद्र का मौलिक सृजन है। आलोचना के क्षेत्र में इस ग्रंथ की महत्ता को देखते हुये इसे कालजयी ग्रंथ कहा जाता है । जिसमें नवीन ज्ञान के प्रकाश में अनेक उद्भभावनाएं की है और रसको व्यापक बनाते हुये नयी कविता को भभी उसकी सीमा में समाहित कर लिया है। स्वयं डॉ. नगेंद्र प्रचीन रस सिध्दांत के संदर्भ में कहते हैं–भ''भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा में रस–सिध्दांत का सदैव विशिष्ट महत्व रहा है। यह सिध्दांत भभारतीय काव्यशास्त्र का मेरुदंड है। एक ओर यह सिध्दांत भभारतीय मेधा में उत्कर्ष और भभारतीय चिंतकों के मानव मन संबंधित गहन अनुशीलन का परिचायक है, वही दूसरी और भभारतीय आचार्यों की सौंदर्यशास्त्र विषयक धारणाओं का परिचय भभी इस सिध्दांत से संबंध्द ग्रंथों में प्राप्त होता है। शास्त्र–रुढ़ियों से मुक्त रस सिध्दांत अपने व्यापक और विकसनशील रुप में काव्य का सार्वभभौम सिध्दांत है, जिसके आधार पर प्रत्येक देश और काल के सर्जनात्मक साहित्य का, सर्जनात्मक साहित्य की प्रत्येक विधा का उचित मूल्यांकन किया जा सकता है।'' [5]

भभारतीय भभाषाओं में रस–सिध्दांत का विवेचन संस्कृत काव्यशास्त्र के आधार पर और अनुकरण पर हुआ है। हिंदी में भभी इसकी परंपरा पर्याप्त समृद्ध और विशाल है। डॉ. नगेंद्र इस सिध्दांत का विवेचन कर इसे चरम अवस्था तक पहुंचाया। विभिन्न आचार्यों व्दारा किये गये आक्षेपों, प्रत्याक्षेपों और शंकाओं का समाधान करने की चेष्टा की है। डॉ. नगेंद्र रसास्वाद की व्याख्या मनोविज्ञान के आलोक में करते हैं। उनके मतानुसार रस अनिवार्यतः आनंदमय चेतना है। इसका विरोध किसी प्रकार नहीं हो सकता साथ ही वे भभावानुभूति से काव्यानुभूति को भिन्न बताते हैं। नगेंद्र के अनुसार जहॉ भभावानुभूति कटुभभी हो सकती है वहा रसानुभूति की नहीं साथही डॉ. नगेंद्र काव्यानुभूति को इंद्रियानुभूति मानते थे, साधारण नहीं किंतु उनके अनुसार भभावित अनुभूति है। इस अनुभूति में ऐंद्रिक और बौध्दिक अनुभूति के तत्व का लवणनीर संयोग है। डॉ. नगेंद्र यह भभी मानते हैं कि आनंद की स्थिति अपने अंतर में ही है। इसे स्वदेश का अध्यात्मदर्शी और विदेश का मनोवैज्ञानिक दोनों मानते हैं। भभारतीय दर्शन सुख को अपनी ही आत्मा का विस्तार मानता है। उस में आनंद को अपनी ही अस्मिता वृत्ति का आस्वादन कहा गया है। विदेश का मनोवैज्ञान भभी आनंद को अंतरवृत्तियों का सामंजस्य ही माना है। डॉ. नगेंद्र ने अपनी साहित्यिक मान्यताओं के संदर्भभमें स्वयं कहा है– ''रसात्मक मूल्यों के अतिरिक्त काव्य के मनिषियों ने नैतिक सांस्कृतिक तथा कलात्मक मूल्यों का भभी निर्वेचन किया है। इन मूल्यों का निषेध कौन कर सकता है ? वस्तुत काव्य के महत्व का निर्णय करनें में इनका योगदान असंदिग्ध है किंतु ये मूल्य मौलिक तथा आत्यंतिक नहीं है। या तो आनुषंगिक है या माध्यमिक, अर्थात नैतिक और साहित्यिक मूल्यों का महत्व इसीलिये हैं कि, उनके व्दारा रसात्मक बोध में स्थिरता एवं स्थायित्व आता है और कलात्मक मूल्य सही शब्दों में शिल्प गतिमूल्य रससिध्दि के माध्यम है स्वतंत्र नहीं है, क्योंकि शिल्प या कला का मूल्य भभी रस ही होता है।''[6]

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि डॉ. नगेंद्र काव्यकृति के लिये रस को ही सर्वाधिक महत्व देते थे। उनके अनुसार रस के बगैर साहित्य, साहित्य नहीं हो सकता, वैसे वे रस के साथ – साथ अंलंकार का महत्व भभी स्वीकार करते हैं परंतु रस ही कृति को उसके साध्य तक पहुंचाता है। इस संदर्भ में राममूर्ति त्रिपाठी का मत उल्लेखनीय है–''नगेंद्र ने काव्य के प्रयोजन पर विचार करते हुये आनंद को काव्य का परम प्रयोजन प्रतिपादित किया है। और उसे ही रसानुभूति कहते हैं। रस निष्पत्ति की प्रक्रिया में वे मनोवज्ञानिक दृष्टि अपनाते हैं। लेकिन

दर्शन की अवहेलना नहीं करते। मनोवैज्ञानिक दृष्टि अपनाने में भभी वें अन्य मनोवैज्ञानिको के भभांति रसानुभूति को सुख दुःख के रुप में स्वीकृत नहीं करते।''[7] हालाकि वर्तमान समय में मार्क्सवादी साहित्य और दलित साहित्य इन परंपरागत काव्यशास्त्र के सिध्दांतों के सौंदर्यशास्त्र को नहीं मानते बावजूद इसके आज भभी प्राचीन काव्यशास्त्र के मानदंडोपर ही साहित्य खड़ा है। आज भी साहित्य में रस, छंद, अलंकार आदि काव्यशास्त्रीय सिध्दांतों का महत्व है इस बात को नकारा नहीं जा सकता।

सैद्धांतिक आलोचना के साथ – साथ डॉ. नगेंद्र ने आलोचना के व्यावहारिक पक्ष पर भी जोर दिया है। व्यावहारिक आलोचना में वे काफी उत्साह दिखाते हैं, साथ ही नवीन उष्मा के साथ काव्य कृतियों की आलोचना करते हैं। जिसे उनकी व्यावहारिक आलोचना को औज्ज्वल्य प्रदान हुआ है। ऐसा करके वे काव्या शास्त्र के जिज्ञासुओं व अध्येताओं का ध्यान अपनी और खींचते हैं। नगेद्र की विशिष्टता यह है कि उन्होंने सैध्दांतिक और व्यावहारिक आलोचना पर समदृष्टि से कार्य किया है। महेंद्र चर्तुवेदी के मतानुसार ''अपनी व्यावहारिक आलोचना में नगेंद्र मुख्यतः कविता केंद्रीत रहे हैं। जिसमें वे रसात्मक, मनोवैज्ञानिक व कलात्मक मूल्यों का तो विश्लेषण करते हैं लेकिन उनका सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पक्षों पर उनका ध्यान नहीं गया है। अपने जीवन के कुछ परिवर्तित वर्षो में उन्होंने शैली विज्ञान, मिथक, साहित्य का समाज शास्त्र आदि को लेकर जो कुछ लिखा वह नवीनता के प्रति आकर्षण और जिज्ञासा की तृप्ति मात्र था।8

कुछ हदतक चतुर्वेदी जी का यह मत सही है परंतु उनका नैतिकता, सामाजिकता पर उनका ध्यान ही नहीं था यह कहना गलत होगा। यह वैसा ही भ्रम है जैसा कुछ विदवानों ने उनकी मनोवैज्ञानिक वृत्ति को देखते हुये उन्हें मनोविश्लेषनात्मक आलोचक कह दिया परंतु वहां भभी मनोवैज्ञानिकता उनका लक्ष नहीं बल्कि रस को साध्य मानते हैं। साहित्य में सदैव दो धाराएं मिलती है। साहित्य, साहित्य के लिये और साहित्य जीवन के लिये। इसमें डॉ. नगेंद्र साहित्य, साहित्य के लिये मानने वाले कोटि के आलोचक थे।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि डॉ. नगेंद्र उच्च कोटि के आलोचक थे। यह सच है कि डॉ. नगेंद्र नैतिक मूल्य को अधिक महत्व नहीं देते हैं. परंतु यह ध्यान में रखना चाहिये कि वे परिष्कृत आनंदानुभूति में ही नैतिक मूल्य को स्वीकार करते थे। उनका मानना था कि, समाज का तिरस्कार करने से लेखक के आत्मा की क्षति होगी किंतु वह जबतक निश्छल आत्माभिव्यक्ति करता रहेगा, उसकी कृति मूल्यहीन नहीं हो सकती। वस्तुतः उनका आग्रह परिष्कृत आनंद और निश्छल आत्माभिव्यक्ति के प्रति था इस बात को समझना जरूरी है।

संदर्भ –

1. संपा – रामेश्वरलाल खंडेलवाल, हिंदी आलोचना के आधारस्तंभभ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2001, पृ. 47
2. डॉ. जयचंद्र राय, हिंदी आलोचना के आधार स्तंभभ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 78.
3. संपा– डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्यक का इतिहास, मयूर पेपर बॅक्स नोएडा, पृ. 780.
4. वही, पृ. 780
5. डॉ. नगेंद्र, रस सिध्दांत, पृ. 362–63
6. राममूर्ति त्रिपाठी, रस विमर्श, वाणी प्रकाशन दिल्ली. प्र. सं. 2010, पृ. 148
7. डॉ. नगेंद्र, आलोचना की आस्था, प्र.सं. 1966, पृ. 06
8. संपा – डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. 797.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org